14

स्वर्ण नगरी की सैर

भारत की पश्चिमी सीमा का सजग प्रहरी है जैसलमेर। इसे स्वर्णनगरी, हेम नगर, भड़ किवाड़ आदि नामों से भी जाना जाता है। रेतीले धोरों ने जीवन को दुर्गम बना रखा है, लेकिन यहाँ की सुंदरता देख लोग दाँतों तले अंगुली दबा लेते हैं। हमने सुना था, जिस प्रकार लाखों लोगों के अंगूठे पर बनी रेखाएँ मेल नहीं खाती, वैसे ही यह स्वर्णनगरी विश्व के किसी शहर से मेल नहीं खाती है।

इतनी सारी बातें सुनने के बाद हमारी पूरी पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने घूमने का निर्णय किया। सर्दी की छुट्टियों में हिंदी के अध्यापक संदीप जी के साथ हम जैसलमेर के लिए रवाना हुए। बीकानेर से रेल रात में चली। बरकत, मुरली, रोनित, किशोरी और हम सभी हँसी–खुशी, मज़ाक करते सो गए।

सुबह जैसलमेर के करीब पहुँचे तो देखा सूरज की किरणें जैसलमेर दुर्ग के पाषाण कणों को चमका रही हैं। जैसलमेर पहुँचे। होटल में ठहरे। तैयार होकर घूमने निकले। सबसे पहले किले को देखना तय हुआ। किला त्रिकूट पहाड़ी पर बना हुआ है। इसे त्रिकूटगढ़ नाम से भी जाना जाता है। महारावल राव जैसल ने इसका निर्माण करवाया। हम प्रथम पोल, अखैपोल से होते हुए दुर्ग के ऊपर पहुँचे। किले की सड़क भी पत्थरों की बनी हुई है। वहाँ हमने रंग महल, मोती महल, जैन मंदिर देखे। लक्ष्मीनाथजी के दर्शन भी किए।

इनके पत्थरों पर कलात्मक खुदाई वाली देवी–देवताओं की प्रतिमाएँ बनी हुई हैं। दुर्ग के चारों ओर निन्यानवे बुर्ज हैं। ये बुर्ज दुर्ग को मजबूती प्रदान करते हैं।

इसे हवेलियों व झरोखों की नगरी भी कहते हैं। यहाँ पटवों की हवेली, नथमल की हवेली, सालम सिंह की हवेली आदि दर्शनीय हवेलियाँ हैं। इनके झरोखों पर की गई नक्काशी लाजवाब है। इनका सौंदर्य देख हम आश्चर्यचकित रह गए।

हवेलियाँ देखने के बाद हम गड़ीसर गए। यह तालाब सदियों से यहाँ के वाशिंदों की प्यास बुझाता आया है। यहाँ का प्रत्येक पत्थर सौंदर्य बिखेरता नज़र आता है। इसी की पाल पर मुक्तेश्वर मंदिर व बगीचियाँ बनी हुई हैं। दर्शन, मोहित, अनुराग को थकान महसूस होने लगी। हम होटल में जाकर आराम करने लगे। दूसरे दिवस हमने बादल विलास और जवाहर विलास देखे। अमर सागर के जैन मंदिर व कुलधरा देखकर हम सम पहुँचे। वहाँ रेत का अथाह समंदर हमें बरबस ही अपनी ओर खींचता है। हम सम के धोरों की मखमली रेत पर खूब नाचे गाए। वहाँ ऊँट की सवारी ने बहुत रोमांचित किया। सूर्यास्त ने अपनी लालिमा बिखेरी और हम जैसलमेर लौट आए।

रात में कैर–साँगरी, पंचकुटा की सब्जी व दाल–बाटी चूरमा का आस्वादन किया। अगले दिवस बड़ाबाग की छतरियाँ और वुडफोसिल पार्क को देखा। बस का रुख पोकरण की ओर हुआ। पोकरण का शक्तिस्थल देखकर सभी का सीना गर्व से फूल गया। सेवली गाँव स्थित कदलीवन धाम के भी दर्शन किए। बस बीकानेर की

ओर चल पड़ी।

हम सभी आज भी इस यात्रा को याद करते हैं, तो रोमांचित हो जाते हैं। उस समय खींचे गए चित्र आज भी उस यात्रा की याद ताजा कर देते हैं। वास्तव में वह यात्रा भुलाएं नहीं भूलती।

वुड़ फोसिल पार्क –

जैसलमेर से बाड़मेर की ओर जाने पर जैसलमेर शहर से पंद्रह किलोमीटर दूर आकल गाँव में दर्जनों पेड़ थे। जो हजारों वर्षों तक विभिन्न मौसमों की चोटें सहते–सहते पेड़ों की लकड़ी जो पत्थर में बदल गई। उस पार्क को राज्य सरकार द्वारा संरक्षित किया गया है ।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

स्वर्णनगरी	–	सोने–सा शहर
दुर्गम	–	मुश्किल
पाषाण	–	पत्थर
नक्काशी	–	पत्थर पर की गई कारीगरी
पोल	–	बड़ा द्वार
प्रतिमाएँ	–	मूर्तियाँ
आस्वादन	–	स्वाद लेना
रुख	–	मुँह, दिशा

उच्चारण के लिए

पश्चिमी, स्वर्णनगरी, अंगूठे, कलात्मक, झरोखों,

सोचें और बताएँ

1. किला किस पहाड़ी पर बना हुआ है ?
2. जैसलमेर दुर्ग का निर्माण किसने करवाया ?
3. गड़ीसर पाल पर बने मंदिर का क्या नाम है ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें

(अ) दुर्ग के प्रथम द्वार का नाम है –

(क) गणेश पोल (ग) सूरज पोल

(ख) अखै पोल (घ) हवा पोल ( )

(ब) दुर्ग के चारों ओर बुर्ज हैं –

(क) नौ (ग) निन्यानवे

(ख) उन्नीस (घ) नवासी ( )

(स) शक्तिस्थल स्थित है –

(क) पोकरण में (ग) स्वर्ण नगरी में

(ख) बीकानेर में (घ) सम में ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

(अ) .... विश्व के किसी भी शहर से मेल नहीं खाती ।

(ब) किले की सड़क भी............................ की बनी है ।

(स) वहाँ ऊँट की सवारी ने बहुत........................ किया।

(द) सेलवी गाँव स्थित.................................... के दर्शन किए ।

3. जैसलमेर में रेत का अथाह समंदर कहाँ स्थित है ?

4. जैसलमेर दुर्ग का नाम लिखें ।

5. जैसलमेर किले में स्थित दर्शनीय स्थलों के नाम लिखें ।

6. ''इसे हवेलियों व झरोखों की नगरी भी कहते हैं।'' क्यों ?

7. स्वर्ण नगरी में दर्शनीय स्थलों की क्या–क्या विशेषताएँ है ?

भाषा की बात

- इस पाठ में "किले" को दुर्ग भी कहा गया है आप भी निम्न शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें–

पाषाण –

तालाब –

बगीचा –

मंदिर –

- पाठ में आए मुहावरों की सूची बनाइए।

यह भी करें

- पाठ में जैसलमेर यात्रा का वर्णन है। आप ने भी अपने आस–पास के दर्शनीय स्थलों की यात्रा की होगी आप द्वारा की गई यात्रा के बारे में अपनी कक्षा में सुनाइए।
- स्वर्ण नगरी के संबंध में मुख्य बातें बाल सभा में सुनाएँ।
- स्वर्ण नगरी के मुख्य दर्शनीय स्थलों के चित्रों का संग्रह कर एलबम बनाएँ।

> सदैव आगे बढ़ने की लगन का नाम ही जीवन है।
> –प्रेमचंद